SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-3, March- 2024
www.shikshasamvad.com

"वर्तमान समय में प्रथामिक शिक्षा की असफलता में सन्देह"

वैशाली मिस्र

शोध सारांश:

शिक्षित परिवार के बिना एक शिक्षित समाज का निर्माण नहीं होता है अगर शिक्षित समाज का निर्माण नहीं हुआ तो हमारे देश का विकास नहीं हो सकता है ।तथा हम तकनीकी युग में तथा एक विकासशील देश में पीछे रह जाएंगे इसलिए शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है ।हमारे जीवन में तथा हमारा जीवन की आधारशिला है शिक्षा ।

प्रस्तावना :-

शिक्षा किसी भी समाज की धुरी होती है इसलिए सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिक शिक्षा को माना जाता है प्राचीन समय में यह सेक्शन लापता तथा आश्रम में दी जाती थी तथा आधुनिक समय में या शिक्षा प्राथमिक विद्यालयों में दी जाने लगी है तथा इस शिक्षा पर सर्वाधिक यूँ ही गांधीजी द्वारा किया गया जो वर्तमान में भारत सरकार द्वारा निःशुल्क का अनिवार्य शिक्षा के नाम से इस अभियान को चलाया जाता है गांधीजी के अनुसार छह 14 वर्ष के व्यक्तियों को नि शुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा देना इससे कोई भी बालक प्राथमिक शिक्षा से वंचित न हो पाए इस मुद्दे से इस शिक्षा की नींव रखी गई थी जादा ज़्यादातर राज्य सरकार इस अभियान का योगदान दिया है तथा केंद्र सरकार ने इस पर अपने धन का व्यय किया है गांधी गांधीजी द्वारा चलाए गए या शिक्षा आज भी आसन ठोस परिणाम मिला है नोटिस के सुनिश्चित विकास और समाज विकास में शिक्षा के क्षेत्र की भूमिका महत्वपूर्ण है भारत सरकार ने शिक्षा के महत्व को समझने हेतु जो सर्वशिक्षा अभियान शुरू किया है उन्हें उनके नतीजे दिल्ली के अनेक हिस्सों में आज भी असंतोष परिणाम देते हैं एक अनुमान के तहत राज्य में कुल मिलाकर 13 लाख पद ख़ाली है अगर बाद कहीं उत्तर प्रदेश की तो यहाँ हर साल नए विद्यालय बंद रहे हैं लेकिन मध्यमान की और धन की कमी के कारण यह विद्यालय नहीं चल रहे हैं एक क्षेत्र के अनुसार उत्तर प्रदेश से मैं लगभग तीन लाख अध्यापक की ज़रूरत है जिसके जिससे राज्य सरकार में 72, हज़ार पर शक स्रचितब किए जाते हैं। पर इस शिक्षकों की कमी नज़र आ रही है एक उदाहरण तरह समझाया

जा सकता है कि जैसे ही पूत के मुँह में ज़ीरा उसी तरह इतनी अध्यापकों की कमी सरकार 72, हज़ार मील दूर करना चाहती है वर्तमान समय में कुछ राज्यों में अभी भी क्षेत्रों को उनके पद ख़ाली हैं इनके क़ायल बदमाशों ने शुल्क हटा अनिवार्य शिक्षा के क़ानून की सफलता में संदेह है

विश्लेषण:—

वर्तमान वर्तमान समय में मैं अभी भी ज़्यादातर राज्य में प्राथमिक शिक्षा के भवन जर्जर है प्राथमिक शिक्षा की अध्यक्षता मुख्य साधनों के अभाव है जैसे की प्राथमिक शिक्षा में 1 जाम पर एक चौका चटाई टेबल दो बड़े कमरे शुद्ध पेयजल तथा साफ़ शौचालय आदि की व्यवस्था तथा उपलब्धता अवश्य तथा अनिवार्य है लेकिन इन सब इन सब का अभाव है जिसके कारण प्राथमिक शिक्षा को वर्तमान समय में सफलता में अभी भी संदेह है इन सबकी ज़िम्मेदारी केंद्र सरकार की है वह अपने गेंदों को नि शुल्क और अनिवार्य शिक्षा के लिए उचित व्यवस्था दी तथा उनके विकास एवं निर्माण के लिए धन व्यय करें जिसे सुरक्षित शिक्षा का विकास हो सके तो शिक्षा के महत्व बलवान हो सके और सफलता को असफलता को रोक सके

देश में शिक्षा की कमज़ोर धारणा को पुष्ट करता है आँखे देश के नितिन ने निर्माता के पास इस सवाल का क्या जवाब है कि इतने वर्षों के बाद भी आज भी नि शुल्क हटा अनिवार्य शिक्षा की असफलता में क्यों संदेही है दूसरी बात यह कि शिक्षा की पहली सीढ़ी ही जज और अव्यवस्थित बोने के साथ 707 अभावों से ग्रस्त यह प्राथमिक शिक्षा के ढांचे में सशक्त बनाने के मामले में सब पहले ही बहु देरी हो चुकी है वह और यदि आवश्यक क़दम उठाने से इंकार किया जा रहा है इसका अर्थ होगा कि देश की जड़ों को जान बूझ का कमज़ोर बना देंगे कि इसमें भारत स्थल का साथ ही साथ केंद्र सरकार मिल का काम करेंगे तभी निःशुल्क तथा निवास शिक्षा को सफलता सफलता पर जो सन्डे ही है उसे दूर किया जा सकता है 20012002 में अटल बिहारी बाजपेयी द्वारा भारत में संविधान संविधान के संविधान के दौरान अच्छी आज विशेष संशोधन में प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण को प्राप्त करने के उद्देश्य से किया गया था और इस कार्यक्रम का उद्देश्य संतोषजनक गुणवत्ता ने प्राथमिक शिक्षा के बॉम्बे करियर को प्रदान करना प्राथमिक शिक्षा के सफलता की संधि इसलिए क्योंकि विद्यालय ऐसे स्थान पर होना चाहिए जहाँ बालकों का संगीत विकास हो सके समाज के कारण हो सके तो शिक्षा के अधिकार आदमियों का समर्थन प्रदान करना था बिना किसी भेदभाव में गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने का लक्ष्य रखना तथा उन्हें अधिकतम विकास व समायोजन के अवसर प्रदान करना इस उद्देश्य तथा लक्ष्यों की प्राप्ति के अभाव के कारण वर्तमान में सर्वशिक्षा अभियान तो निःशुल्क शिक्षा की सफलता में संदेह है

सर्व शिक्षा अभियान के उद्दिष्ट लक्ष्य एवं कार्यक्रम ठेके 2003 तक समन्वय तथा बँधे बच्चों के लिए स्कूल शिक्षा गारंटी के नेता बैक टू सीवर की उपलब्धता 2 छः सात तथा समान बच्चों को पाँच वर्ष तक प्राथमिक शिक्षा 2010 तक आठवीं स्कूल का सामान छात्रों को शिक्षा की पूर्ति करना तथा सभी पढ़ें योग बच्चों को विद्यालय पहुँचाया जाए जिसकी बच्चों तथा शिक्षा का आधारभूत ढांचा मज़बूत हो सके समाज का समय समाज में समानता की सर डान एक लक्ष्य को प्राप्त करना जीवन उपयोगी व गुणवत्ता गुणवत्ता शिक्षा उपलब्ध कराने का अवसर प्रदान करना तथा शिक्षा के अधिकार अधिनियम के समर्थन प्राप्त करना साल तक चाबियाँ छह 14 वर्ष की आयु समूह के सभी बालकों को बिना किसी भेदभाव के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देना

सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत गारंटी इसकी ETS वैकल्पिक शिक्षा प्रावधान घर आधारित शिक्षा का सुझाव देना था छात्रों को विद्यालय में प्रवेश के लिए आवश्यक समाधान तथा 4 तक उपलब्ध समर्थन उपलब्ध कराना इन सभी तथ्यों को पूरी ईमानदारी से तो ध्यान केंद्रित कर के काल किया जाएगा तो अनुवाद अनिश्चितता के बदमाश समय में सफलता से संदेश से मुक्त हो सकता था यह अभियान

उद्देश्य :~

इस शोध आलेख का उद्देश्य है कि वर्तमान में अनिवार्य करने से शिक्षा की जो उत्तेजना जैसे की प्राथमिक शिक्षा की शिक्षा के छात्रों का वंचित न होना प्राथमिक शिक्षा से छात्रों को वंचित न होना सबको शिक्षा के महत्व को बताना तथा शिक्षा के प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता गुणवत्ता मेहता का गुणगान करना केंद्र सरकार द्वारा में योगदान देना शिक्षा के आधारभूत ढांचा प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति करना प्राथमिक शिक्षा के अंतर्गत 2 कमरे तथा अध्यापक एवं महिला अध्यक्ष विशेष रूप से पाठ्यक्रम का शिक्षा प्रदान करने में संसाधन इन सब की सूची व्यवस्था करना तथा विद्यालय ऐसे स्थान पर जहाँ घर से दूर 1 किलोमीटर हो इन उद्देश्यों की पूर्ति करना प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य है इस शोध आलेख में हम यह जानने का उद्देश्य है कि यह क्यों असफल रहा इनकी सफलता पर संदेह है कि वहाँ क्यों प्राथमिक शिक्षा अपने उद्देश्य की पूर्ति करना चाह रहा था उसमें भारत सरकार तक था उसमें भारत सरकार तक किए अगर इन तथ्यों को ध्यान में रखकर कार्य किया जाएगा यह सफलता प्राप्त होगा तथा लोगों को जागरूक बनाना होगा जिसने की शिक्षा के खेत लोग अमूल चूल परिवर्तन हो सके तक हम टाटा सफलता असफलता क्यों असफल हुआ इस पर भी ठोस क़दम उठाए

निष्कर्ष :—

उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में अनिवार्य के तथा नि शुल्क के शिक्षा की सफलता पर संदेह है कि बदमाश समय में बनाया गया क़ानून तथा कुछ अधिकार नीति सब कुछ इसकी मैं जिसका हमारी सरकार पूर्णरूप से पालन नहीं कर रही है जिससे कि वर्तमान में सफलता में संदेह है पुलिस जब से चाबियाँ तो निचली शिक्षा के लोगों को जागरूक किया जाए एवं प्रांतीय पिता तो उपयोग संसाधनों का आभास जलचर विद्यालय शिक्षकों की कमी की चाल सामग्री की उचित पुरोधा तथा शुद्ध पेयजल की व्यवस्था न होना था बट मार में चलाया के मीठे मील कार्यक्रम उचित प्रबंध न होना आदि ही कारणवश आज भी नि शुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा की सफलता में संदेह यदि साक्ष्य चाह अभियान को सफल बनाना है तो इसके लिए केंद्र सरकार तो भारत सरकार को महत्वपूर्ण क़दम उठाने होंगे जिससे कि वह सफल हो सके तो टाइम की व्यवस्था पर ध्यान धन व्यय करना शिक्षकों के रिक्त पदों की पूर्ति करनी होगी तो ग्रामीण क्षेत्रों को लोगों को बालकों के लिए प्रथामिक शिक्षा निश्चित एवं अनिवार्य क्यों है। इसके प्रति जागरूक बनाना होगा जिसमें कि

हमारे देश की आधारभूत ढांचे का विकास हो सके तो शिक्षा के क्षेत्र से कोई भी वंचित न हो सके वर्तमान में चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रम के प्रति लोगों को जागरूक कराना होगा। साथ ही साथ ही सरकार को पोषित महत्वपूर्ण क़दम उठाने होंगे जिससे की सफलता पूर्वक सफल हो सके।।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-03, March- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-March-2024/26

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

वैशाली मिस्र

For publication of research paper title

"वर्तमान समय में प्रथामिक शिक्षा की असफलता में सन्देह"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-03, Month March, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com